विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ , लखीसराय
वर्ग - प्रथम दिनांक :- 06/11/2020
विषय - सह - शैक्षणिक गतिविधि
एनसीईआरटी पर आधारित (कहानी)
शैतान मेंमना

एक बकरी अपने शैतान बच्चे के साय रहती थी। एक दिन सुबह, उछलते-कूदते मेमना जंगल की ओर चला गया। उसकी माँ ने बच्चे को काफी मना किया कि वह घने-अंधेरे जंगल में अकेले न जाए।

उसने कहा, “वहाँ बहुत सारे जंगली और खतरनाक जानवर होंगे। बेटे, वहाँ अकेले मत जाओ।” माँ, चिंता मत करो। मैं ज्यादा दूर नहीं जाऊँगा.” मेमने ने जवाब दिया।

नन्हा मेमना उछल-कूद करते हुए खेल में मग्न हो गया और उसे पता ही नहीं चला कि वह जंगल में कितने दूर आ गया है। जल्द ही अंधेरा हो गया।

अब वह वापस अपनी माँ के पास जाना चाहता था, लेकिन बेचारा इरा-घबराया मेमना रास्ता भूल गया! वह गुम हो चुका था और उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

वह अपनी माँ को पुकारते हुए चिल्लाने लगा। उसे अपने आरामदायक घर की याद सताने लगी। उसे महसूस हुआ कि उसने अपनी माँ की बात न मानकर बड़ी गलती कर दी।

तभी, एक भेडिया वहाँ आ पहुँचा औट बोला, अरे! आज रात तो मैं इसी मेमने का स्वादिष्ट गोश्त खाऊँगा!” भेड़िया ने झपटकर मेमने को दबोच लिया। वेचारे मेमने को अपनी माँ की बात न मानने का दंड भुगतना पड़ा।

****

ज्योति